International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences
ISSN: 2278-6236
Impact Factor: 6.943

कायमखानी समाज–एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. विद्यानन्द सिंह
व्याख्याता (चयनित वेतनमान)
राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़

राजपूताने के प्रथम और प्रसिद्ध इतिहास लेखक कर्नल जेम्स टॉड ने इस देश का नाम राजस्थान या रायथान दिया हे, जो राजाओं या उनके राज्यों के स्थान का सूचक है, परन्तु अंग्रेजों के पहले यह सारा देश उस नाम से कभी प्रसिद्ध रहा हो ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता अतएव यह नाम भी कल्पित ही है क्योंकि राजस्थान या उसके प्राकृत रूप रायथान का प्रयोग प्रत्येक राज्य के लिए हो सकता हैं इसी राजस्थान या राजपूताने की बीकानेर रियासत जिसकी स्थापना राव बीका ने 1545 वि.सं. में की थी।

मर्दुमशुमारी मारवाड़ में मारवाड़ की कौमों को अलग–अलग श्रेणियों (क्लास) में बाँटा गया है। ए क्लास में जमींदारी और खेती करने वाली कौमें रखी गई है। बी क्लास में नौकरी पेशा और मांगने वाली कौमे, सी क्लास में वाणिज्य–व्यापार करने वाली कौमें, डी क्लास में कारीगर कौमें, ई क्लास में मजदूरी पेश कौमें तथा एफ क्लास में हिन्दुस्तान के बाहर रहने वाली कौमें रखी गई है।

कायमखानी, जिन्हें राजपूताना के इतिहास में मुस्लिम चौहान कहकर प्रशंसित किया गया है, हमारे देश की प्राचीनतम क्षत्रिय जाति रही है। मारवाड़ में मुसलमान राजपूतों के कई थोक है मगर ये चार बड़े थोक या खाँप है और सब अपनी असली खांप के नाम से सिपाहियों में पहचाने जाते हैंः–

1. सिंधी जो पश्चिम मारवाड़ में रहते हैं।
2. देसवाली जो पूर्व मारवाड़ में हर जगह पाये जाते हैं।
3. कायमखानी ये चौहान भी कहलाते है और नागौर डीडवाणे की तरफ बहुत है।
4. नायक यह जोधपुर में ज्यादा है।

जो कि ये लोग जबरदस्ती मुसलमान किये जाते थे या एकदम से जान बचाने के वास्ते मुसलमान होते थे इस सबब से इनमें मुसलमानी तरीका पूरा–पूरा कायम नहीं हुआ। अब तक भी सिवाय नाम, निकाह, मुरदे को गाड़ने और ऐसी ही दो एक और मुसलमानी बातों के बाकी सब रस्म रिवाज उनके हिन्दुओं जैसे हैं और इसीलिये यहां के हिन्दु भी उनसे वैसा परहेज और छूत–विचावर नहीं रखते जैसा कि परदेसी हिन्दुओं से रखते है।

वस्तुतः कायमखानी चौहान राजपूतों के वंशज है। तत्कालीन जांगल प्रदेश में अवस्थित ददरेवा ठिकाना के अधिपति मोटेराव चौहान कायमखानियों के शिखर पुरुष थे। कायमखानियों की उत्पत्ति के संदर्भ में एक बहुश्रुत आख्यान **कायम खाँ** रासो में उल्लेखित किया गया है। कवि जान ने लिखा है कि ददरेवा ठिकाने के कुंवर कर्मसिंह एक बार शिकार खेलते समय भटक गये। फिर वन में एक पेड़ की छाया में सो गये। शाम होने पर अन्य सभी पेड़ों की छाया विलुप्त हो गयी परन्तु उस पेड़ की छाया उन पर पड़ती रही जिसके नीचे वे सोये थे। दिल्ली सुल्तान फिरोज तुगलक भी संयोगवश इसी सघन वन में शिकार खेलने के लिए आये हुए थे। इस दृश्य को देखकर अचंभित हो गये और कुंवर कर्मसिंह को अपने साथ दिल्ली ले गये। जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया व वे कायम खाँ के नाम से प्रतिष्ठित हुए तथा हांसी–हिसार के फौजदार के रूप में उन्होंने दिल्ली सल्तनत को अपनी सेवाएँ प्रदान की।

कायम खाँ के पुत्रों ताज खाँ, महमूद खाँ, कुतुबखाँ, इख्तियार खाँ व मोइन खाँ थे। इनका कार्यक्षेत्र शेखावटी मारवाड़ व जांगल प्रदेश तक विस्तारित था। कायम खाँ रासों के अनुसार शेखावटी क्षेत्र के दो ठिकाने फतेहपुर फतेह खाँ के द्वारा व झुंझनूं महमूद खाँ द्वारा स्थापित किये गये थे।

कायमखानी मारवाड़, शेखावटी, हांसी हिसार नारनौल में रहते हैं। क्यामखानी नाम के मुसलमान है और अब तक भी नमाज, रोजे और कुरान से पूरे–पूरे वाकिफ नहीं। इनमें बहुत सी रस्में राजपूतों की बदस्तूर जारी है जैसे ब्याह में तोरण बांधा जाता है, निकाह के बाद फेरे होते है। होली, दीपावली का त्यौहार भी ये लोग मनाते है। इनकी खांपे अलफखानी व ताहरखानी अपने बुजुर्गों के नाम पर है। क्यामखानी खेती, व्यापार इत्यादि करते है। वर्तमान में यह कई बड़े पदों पर आसीन है। कायमखानियों की प्राचीनता की जानकारी कई शिलालेखों व मुगल ग्रंथों से भी मिलती है

संदर्भ ग्रंथ :–

1 भारतीय संस्कृति समाज और पुष्करणा – डॉ. मुकेश हर्ष, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर–2018, पृ. 42–49।
2 कायमखानी ए क्लास में मुसलमान राजपूत के रूप में वर्णित है। (मरदुमशुमारी राज मारवाड़)
3 मरदुमशुमारी राज मारवाड़–1891 ई. (विद्यासाल जोधपुर), महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, शोध केन्द्र, जोधपुर, 2010
4 पूर्वोक्त, पृ. 65–66
5 वही, पृ.–76

6 कुंवर कर्मसिंह के साथ उनके दो भाई कुंवर जेन दी व सदर दी ने भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया जबकि उनके भाई कुंवर जगमाल की आस्था हिन्दू धर्म में बनी रही। वही–पृ–76

7 कायम खाँ रासो कवि जान द्वारा प्रणीत किया गया था, जो नेडमत खाँ के नाम से जाने जाते है।

8 कायम खाँ रासो–कविजान उर्फ नियामत खान कायम खानी हिन्दी अनुवाद–डॉ. रतनलाल मिश्र, राजस्थान कायमखानी शोध संस्थान, जोधपुर, पृ 29–37

9 विकल्प–मासिक पत्रिका, बीकानेर, अप्रैल 2015, पृ. 23–25, शेखावटी क्षेत्र में स्थित फतेहपुर को वि.सं. 1508 में क्यामखानी मुसलमानों के आदि पुरुष कायम खाँ के वंशज फतेहखान ने बसाया था।

10 मरदुमशुमारी राज मारवाड़–पृ.–76–78